IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रामीण अंचल के सामाजिक विकास में पुस्तकालयों की भूमिका

शोधार्थी – रमा अहीर
रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल

निर्देशक – डॉ.संगीता आम्टे (प्राध्यापक)
रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल

सारांश – यह शोध पत्र ग्रामीण अंचल के सामाजिक विकास में पुस्तकालयों की भूमिकाकी जाँच करता है ग्रामीण विकास मे पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था के रूप मे कार्य कर गति प्रदान कर रहा है पुस्तकालय अपने उसी अर्थ व मूलभूत उद्देश्य के साथ अपना दायित्व पूरा कर रहा है ग्रामीण अंचलों में पुस्तकालयों की स्थिति, उनकी सेवाएं, और उनके द्वारा समाज में किए गए सकारात्मक बदलावों का अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी – ग्रामीण अंचल , निर्वहन ,विकास , सामाजिक संस्था

परिचय –भारत के अधिकांश हिस्सों में ग्रामीण क्षेत्र समाज का प्रमुख भाग हैं, जहां आबादी का एक बड़ा हिस्सा निवास करता है। ग्रामीण विकास एक महत्वपूर्ण कारक है जो देश की समग्र प्रगति को प्रभावित करता है। पुस्तकालय ज्ञान, शिक्षा और सूचना के प्रमुख स्रोत हैं जो किसी भी समाज की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैंपुस्तकालय ही एक ऐसा स्थान है जहा गहन ज्ञान से परिपूर्ण पुस्तकें व्यवस्थित रूप से पाठकों के उपयोग के लिए रखी जाती हैं। इस प्रकारमनुष्य के व्यक्तित्व के विस्तार में पुस्तकालयों का योंगदान अनुपम है।

शोध की आवश्यकता –ग्रामीण विकास मे पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है जो इनके विकास मे पुस्तकालय द्वारा शिक्षा के क्षेत्रमें महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों को सामाजिक स्तर पर आने वाली समस्याओं का पता लगाकर उचित समाधान खोजने का प्रयत्न करना

शोध के उदेश्य–

1. ग्रामीण समाज के विकास में पुस्कालय की भूमिका का अध्ययन करना
2. ग्रामीण अंचल में पुस्तकालयों की स्थिति का मूल्यांकन करना
3. ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा की स्थिति का विश्लेषण करना
4. ग्रामीण अंचल की सामान्य स्थिति का अध्ययन करना

ग्रामीण अंचल की स्थिति–ग्रामीण क्षत्रो में कृषि ही जीविका का मुख्य साधन है कभी महात्मा गाँधी ने एक बार कहा था की भारत की वास्तविकता प्रगति का तात्पर्य शहरी औद्योगिकी केन्द्रों के विकास से नही बल्कि मुख्य रूप से गाँव के विकास का केंद्र है हम भारत की वास्तविक उन्नति चाहते है तो हमे विकसित ग्रामीण भारत का निर्माण करना होगा

ग्रामीण शिक्षा–आधुनिक समाज में शिक्षा के महत्व को जितना भी अधिक बतलाया जाए उतना ही कम है,समाज के निर्वाह तथा अग्र विकास के लिये पठित तथा शिक्षित जनता का होना तो एक पूर्वपेक्षा ही है आधुनिक सामाजिक जीवन के विभिन्य क्षेत्रो (आर्थिक,राजनैतिक ,सामाजिक नैतिक तथा अन्य)में जनता के लिए शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता सर्वत्र तथा सामान्य रूप से मानी गई है

सामाजिककारण –ग्रामीण जनता के लियेसामाजिक कारण से ही शिक्षा प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है आधुनिक समाज में सभी नागरिको के मध्य सभी सामाजिक सम्बन्ध अनुबंध के सिद्धांत से शासित होते है न की प्रस्थिति के द्वारा जैसा की पूर्वकाल में होता था अनुबंधीय सामाजिक सम्बन्ध जटिल तथा बहु संख्यक होते है और वे नागरिक से ये आशा करते है की वह आधुनिक समाज की आधारभूत संरचना का ज्ञान प्राप्त करे और इसलिए शिक्षा आवश्यक हो जाती है

सांस्कृतिक कारण–संस्कृति के अध्ययन तथा आत्मसात करने के लिए जिसने सम–सामयिकी युग का विकास किया है शिक्षा भी एक पूर्वपेक्षा है प्राकृतिक जगत के मानवीय ज्ञान ने वर्त्तमान समय में विलक्षण उन्नति की है और मनुष्य को प्रक्रति के ऊपर प्रभुत्व प्रदान कर दिया है इसी प्रकार सामाजिक जीवन के क्षेत्र में भी ज्ञान की असीम वृद्धि हुई है और उसके द्वारा मनुष्य अपने सामूहिक सामाजिक जीवन को अधिक सचेतन रूप से ढालने में समर्थ हो गया है इसके अतिरिक्त कलात्मक संस्कृति के क्षेत्र में भी अत्यंत उन्नति हुई है इस मूल्यवान आधुनिक संस्कृति के एक अंग ने संसार की संस्कृति का रूप धारण कर लिया है संसार की इस शक्तिशाली संस्कृति को आत्मसार करने के लिए शिक्षा ही प्रबलरूप से आवश्यता है जो

व्यक्ति के बौद्धिक तथा भावनात्मक जीवन को समृद्ध बनाने और उसके द्वारा उसे समाज की उन्नति में योगदान करने के योग्य बनाती है

अन्य कारण–कृषक के लिए शिक्षा और भी आवश्यक है क्योकि इसी के द्वारा वह एसी उन्नतिशील कृषि – तकनीक के लाभों को समझ सकता है जैसे – ट्रेक्टर ,उर्वरक ,फसल काटने तथा भूसा निकालने वाले यंत्र भारतीय ग्रामीण जनता का अत्यधिक भाग घोर अज्ञान तथा अशिक्षा के अंधकार में डूबा हुआ है ग्रामीण मनुष्यों को शिक्षित एवं विद्वान् नागरिक में परिवर्तित कर देना अत्यंत ही बड़ी समस्या है

पुस्तकालय–पुस्तकालय एक ऐसा बौद्धिक सामाजिक केंद्र है जंहा प्रत्येक जिज्ञासु बिना किसी भेदभाव के चाहे वह किसी भी जाति,धर्म संप्रदाय या लिंग का हो उसे पाठ्य सामग्री उपलब्ध मिलती है पुस्तकालय ज्ञान सूचना एवं मनोरंजन का केंद्र है पुस्तकालय को आधुनिक युग का विश्वविद्यालय कहा जा सकता है

डॉ.रंगनाथन के अनुसार ,पुस्तकालय एक सार्वजनिक संस्था है जिसका कार्य पुस्तकों के संग्रह की देखभाल व रखरखाव करना तथा उनको पाठको की आवश्यकता के अनुसार उपलब्ध कराना और अनियमित पाठको को नियमित रूप मे बदलने का कार्य करना है।

कुछ समय पहले पुस्तकालय का जो उपयोग था आज उसका रूप बिल्कुल भिन्य है सामूहिक शिक्षा की अवधारणा ने पुस्तकालय का स्वरूप ही बदल दिया

व्यक्ति के ज्ञान का विस्तार करने के लिए पुस्तके बहुत उपयोगी है। औसत वर्ग का व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार महंगी पुस्तके नही खरीद सकता और न ही उसकी देख रेख कर सकता है इसलिए वह शिक्षा से वंचित रह जाता हैं।परंतु पुस्तकालय(लाइब्रेरी)के माध्यम से वह सभी प्रकार के पुस्तके पढ़ सकता है और अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकता हैं।

समाज की आवश्यकता–समाज तथा पुस्तकालयो का गहन संबंध है समाज ऐसे लोगो का एक समूह होता है जो किसी विशेष प्रयोजन अथवा कार्य के लिए मेलजोल रखते है और कुछ नियम तथा परम्पराओ मे भागीदार होते है पुस्तकालय लोगो से संबद्ध होने के नाते सामाजिक संस्थाये है पुस्तकालयो की भूमिका ही समाज के लिए होती मानव सभ्यता पर अध्ययन करने से पता चलता है की पुस्तकालय पुस्तकालय सभ्य समाज का आभिन्य अंग है समाज सेवा ही पुस्तकालय का उद्देश्य है पुस्तकालयो के प्रकार विशेषताए प्रयोजन कार्य तथा सेवाए सभी समाज की आवश्यकताओ के अनुसार निर्धारित होते है पुस्तकालय ने भारतीय ज्ञान संस्कृति और परम्पराओं के विकास मे सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है आज के सभ्य समाज के निर्माण मे पुस्तकालय की सराहनिय योगदान रहा है

पुस्तकालय की समाज मे भूमिका –आज का लोकतान्त्रिक युग समतमूलक समाज की वकालत करता है जिसमे प्रत्येक मानव को अपने विकास एवं शिक्षा के लिए बिना किसी भेदभाव के समान अवसर प्रदान होना चाहिए तथा विभिन्य तरह की सूचनाओ का उपयोग मानवीय विकास के लिए बिना भेदभाव के होना चाहिए पुस्तकालय द्वारा पुस्तकों एवं सूचनाओ का व्यवस्थापन और प्रसारण समस्त उपयोक्ताओ को किया जाता है एवं अपने सामाजिक और शैक्षणिक दायित्वों का निर्वाह किया जाता है

इसके साथ ही ग्रामीण आर्थिक विकास के अभिकरणों के सफ़ल व लाभकारी उपयोगी हेतु भी पुस्तकालय एक अच्छा माध्यम है क्योकि इस माध्यम से ग्रामीण जनता को सही समय पर निश्चित व आवश्यक सूचनाये प्राप्त होती रहेगी जिसका फायदा ग्रामीण जनजीवन उठा सकेगे ग्रामीण पिछड़ेपन के विभिन्य कारणों को पुस्तकालय द्वारा आसानी से कम किया जा सकता है प्रदर्शनी, चलचित्रों, व्याख्यानो, साहित्य, पत्र–पत्रिकाओ एवं सन्दर्भ सेवा से ग्रामीण मन मस्तिष्क मेंउपयोगी व लाभकारी परिवर्तन से उन की सोच को धनात्मक व विकासशील दिशा में मोड़ा जा सकता है जिससे वे संकीर्ण मानसिकता व अज्ञानता से ऊपर उठकर अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकेगे ये स्थिति न केवल उनकी औसत आय में वृध्दि करेगी अपितु सामाजिक रूप से भी बेहतर स्थिति प्रदान करेगी जिससे वे अन्य विकसित समाज की बराबरी में आ सकेगे

पुस्तकालय का महत्व – समाज में पुस्तकालयो का बड़ा महत्व है हमारे जीवन में पुस्तको का बहुत महत्व है जिस प्रकार शरीर की पुष्टि एवं स्वास्थ्य के लिए भोजन की आवश्यकता होती है इसी प्रकार मस्तिक की पुष्टि के लिए पुस्तको की आवश्यकता होती है पुस्तके ज्ञान का भंडार होती है। पुस्तकालय ही वह संस्था है जहा पाठक आवश्यक जानकारी प्राप्त करता ह, समाज का ज्ञानात्मक पक्ष का विकास एवं सर्वागीण विकास में पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। पुस्तकालय हमारे ज्ञानवर्द्धन और मार्गदर्शन में सहयोगी होते है पुस्तकालय केवल पाठ्य पुस्तको तक ही सीमित नही है यहाँ सन्दर्भ सामग्री पत्र – पत्रिका एवं अन्य पाठ्य सामग्रियों का आदान –प्रदान भी डिजिटल माध्यमो से किया जाता है

पुस्तकालयों की स्थिति: अधिकांश ग्रामीण अंचलों में पुस्तकालयों की स्थिति संतोषजनक नहीं है। बजट की कमी, उचित प्रबंधन का अभाव, और संसाधनों की कमी के कारण पुस्तकालयों का संचालन कठिन हो जाता है। हालांकि, कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में सक्रिय पुस्तकालय सामाजिक और शैक्षिक जागरूकता बढ़ाने में सफल रहे हैंजब एक पूरी पीढ़ी मोबाइल की मानसिक कैदी बन गई है युवा पुस्तकों के बजाय कुछ पलो मे सफलता और करोड़पति बनने का मंत्र तलाश रहे हो ,तब ग्रामीण पुस्तकालय की स्थापना न केवल गाँव के लोगो को पुस्तक उपलब्ध करवाकर अध्ययन संस्कति से समझ का विस्तार करेगा बल्कि संसाधन विहीन युवाओ के लिए एक उम्मीद भी साबित होगा पुस्तकालय लोगो की आर्थिक सामाजिक गतिविधियो और पढ़ने लिखने का केंद्र होगा

ग्रामीण अंचल में पुस्तकालयों की वर्तमान स्थिति–ग्रामीण पुस्तकालय जनोपयोगी संस्था है इनका आस्तित्व पुस्तकालय के आस्तित्व से ही जुड़ा है परन्तु जन पुस्तकालय अवधारणा का वास्तविक विकास जनतंत्र के साथ हुआ और पुस्तक और सर्वार्थ की संकल्पना के साथ ज्ञानार्जन में भी जनतंत्र का युग आरम्भ हुआ 1

निरक्षरता–निरक्षरता उन्मूलन की दिशा में राजकीय स्तर पर सक्रीय एवं सतत प्रयास किये जा रहे है किन्तु ग्रामीण पुस्तकालयों को अपेक्षित महत्व प्रदान नही किया जा रहा है इस सन्दर्भ में यहाँ यह कहना अनुपयुक्त नही होगा की ग्रामीण पुस्तकालयो के अभाव में आज साक्षर बनाये गये व्यक्ति कल पुनः निरक्षरता के अंधकार रूपी गर्त में डूब जायेंगे इसलिए साक्षरता कार्यकर्मो में ग्रामीण पुस्तकालयों की भूमिका को नकारा नही जाना चाहिए1

सीमित आर्थिक साधन–भारत एक निर्धन देश है धन के अभाव में वांछित पुस्तकालय सेवा स्थापित करना कठिन है सरकार का ध्यान भी जनसाधारण की तीन प्राथमिक आवश्यकताये रोटी ,कपडा और मकान पर केन्द्रित रहता है1

पुस्तको ,विशेष रूप से वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य का आभाव – भारतीय भाषाओ में पुस्तको का नितांत अभाव है यह अभाव विशेष रूप से वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य के क्षेत्र में द्रष्टिगोचर होता है लेकिन धीरे –धीरे स्थिति में परिवर्तन हो रहा है 1

जनसंख्या का बिखराव–भारत की 70%जनता सुदूर ग्रामीण क्षेत्रो में छोटे-छोटे ग्रामो और पुरबो में निवास करती है इन छोटे-छोटे ग्रामो और पुरबो में संतोषजनक पुस्तकालय सेवा केवल चल पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जा सकती है जो काफी व्ययसाध्य कार्य है 1

अभिप्रेरणा का अभाव–किसी भी जन-कल्याण के कार्य के प्रति लोगो में कोई विशेष रूचि नही है अत: पुस्तकालय विकास को भी कोई बल प्राप्त नही हो सका है

निष्कर्ष–पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था है पुस्तकालय निरंतर समाज-कल्याण में रत रहते हुए बिना किसी भेद-भाव के सभी को ज्ञान वितरित करती है और मानवता की साहित्यिक और बौद्धिक उपलब्धियों को आगामी पीढ़ी के लिए सर्वदा सुरक्षित रखती है

ग्रामीण पुस्तकालय की स्थिति को सुधार की आवश्यकता है ग्रामीण पुस्तकालय में वित्तीय सहायता ,संसाधन ,जन-भागीदारी को बढ़ावा पुस्तकालय की स्थिति को सुधारकर उन्हें सामाजिक केंद्र बनाया जा सकता है

संदर्भ ग्रन्थ –

पुस्तक –

1. RURAL LIBRARIES AND THE CHALLENG OF ACCESS IN THE DIGITAL ,JONN DOE
2. INFORMATION SOCIETY ,महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय
3. पुस्तकालय नित्यचर्या एवं सन्दर्भकार्य ,वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय ,कोटा
4. भारतीय ग्रामीण –समाजशास्त्र ,एस.आर देसाई .रावत पब्लिकेशन
5. आचार्य एस.एस 2004 ,एग्रीकल्चर मार्केटिंग स्टेट ऑफ़ इन्डियन फोर्मर
6. पुस्तकालय ज्योति ,गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ,बिलासपुर 1986-87 पृष्ठ 27
7. छतीसगढ़ में सार्वजनिक पुस्तकालयो का विकास ,इतिहास उसका दर्शन एवं साहित्य में योगदान ,यादव श्याम
8. ncert.nic.in/ncerts//khec.106 pdf